मेरी कलम से कुछ शब्द

प्रश्न हैं मेरे मन में,
अंत कभी होते नहीं ।
सोचते हैं जवाब में,
बंद कभी होते नहीं ॥
दिमाग की बत्ती जलते ही,
बुझने का कोई नाम नहीं ।
मानव के ही शब्दकोश में,
“असंभव” शब्द का स्थान नहीं ॥
जीवन-मरण के सत्य को,
मानना ही बुद्धिमत्ता है ।
जीवनरूपी युद्ध-क्षेत्र में,
प्रेम बिना, जो निहत्था है ॥
विज्ञान कितना ही विकास कर ले,
मरण को रोक सकते नहीं ।
होना है जो, वह होकर रहेगा,
कभी उसे बदल सकते नहीं ॥

द्वारा
आर.बाबूराज जैन टी.जी.टी. (हिंदी) ज.न.वि.पुदुच्चेरी